साकी पिलावे सराब

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए ।
हक इस्क का आब, भर-भर प्याले पीजिए।।

कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहरबान।।

कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार।
क्यो कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार।।

हकें लिख्या कुरान में, पेहले मेरा प्यार।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार।।

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की,जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।।